कहानी के आगे

एक कक्षा अनुभव

मौअज़्ज़म अली

इस स्कूल में मेरा लगातार जाना होता है। आज मैं गया तो किसी और काम से था लेकिन स्कूल में एक शिक्षिका के अनुपस्थित होने के कारण और प्रधान-अध्यापक के किसी अन्य काम में व्यस्त होने की वजह से व उनके आग्रह करने पर मुझे कक्षा पाँच में जाने का मौका मिला। आज के लिए मेरे पास किसी भी तरह की कोई कक्षा-योजना नहीं थी। बच्चे मुझे अच्छे से पहचानते थे क्योंकि उनके साथ मैंने पहले भी प्रेमचन्द की एक कहानी 'नादान दोस्त' पर काम किया था। उन्हें अभी भी वह कहानी याद थी। थोड़ी देर उस कहानी पर बात करने के बाद, मैंने उनसे पूछा कि हिन्दी की किताब में अभी किस पाठ पर काम हो रहा है। सभी ने बताया, "एडिसन की कहानी।" वही एडिसन जिसने बल्ब का आविष्कार किया था। इस पाठ में एडिसन के बचपन से जुड़ा एक किस्सा है। बच्चों ने अभी तक इस पाठ को नहीं पढ़ा था, तो पहले इस पाठ को पढ़ा गया। बारी-बारी से बच्चों ने इस पाठ को थोड़ा-थोड़ा करके पढ़ा और उसके बाद बचे हुए पाठ को मैंने बच्चों के सामने ज़ोर-से पढ़ा।

तत्पश्चात इस प्रश्न के साथ बातचीत शुरू हुई कि 'इस पाठ को पढ़ने से क्या समझ में आता है?' इस पर बच्चों के जवाब इस प्रकार रहे–

- हमें सीखने के लिए लगातार मेहनत करनी चाहिए।
- हम जो भी काम करें, हमें अपने ऊपर विश्वास होना चाहिए।
- कभी किसी के आगे झुकना नहीं चाहिए।

सोचते हैं। मैंने पूछा, "लगातार मेहनत करने का क्या मतलब है?"

इस पर सुमित ने, जो बहुत अच्छे से और धाराप्रवाह पढ़ता है, जवाब दिया, "सर, मुझे पढ़ना नहीं आता था। मैंने पढ़ना सीखने के लिए लगातार मेहनत की, और मैं पढ़ना सीख गया।" मन में विचार आया कि चलो, इसी विषय पर बच्चों के साथ ठहरकर बातचीत की जाए और यह

- अपने दिमाग से काम लेना चाहिए।
- नई-नई चीज़ें खोजते रहना चाहिए।
- अपना नाम रोशन करना चाहिए।

पढ़ना सीखने की जुगत

बच्चों द्वारा साझा किए गए विचारों पर एक-एक करके बात करने की बात सूझी यह समझने के लिए कि वे अपने इन विचारों के बारे में क्या समझने की कोशिश की जाए कि इस बच्चे ने पढ़ना सीखने के लिए क्या-क्या प्रयास किए, ताकि अन्य बच्चों को भी जो अभी ठीक से पढ़ नहीं पाते, इससे कुछ फायदा हो। सुमित ने अपना अनुभव साझा किया –

- सर और मैडम से मदद ली।
- रोज़ अखबार पढ़ता था।

- सभी कक्षाओं की किताबों की कहानियाँ पढ़ता था।
- रास्ते में दिखने वाले साइन-बोर्ड पढ़ता था।

इससे ये बात साफ तौर से निकलकर आती है कि जब बच्चे में पढ़ने की इच्छा जागृत हो जाए तो वह इसमें प्रगति के अपने अवसर खोज ही लेता है। साथ ही, इस बात को भी समझने की ज़रूरत है कि किसी बच्चे में पढ़ने की इच्छा जागृत कैसे होती है। बहुत बार ऐसे अनुभव भी हुए हैं कि कक्षा सात-आठ के बच्चे भी ठीक से पढ़ नहीं पाते। जो बच्चे बड़ी कक्षाओं में आकर भी नहीं पढ़ पाते, उसके क्या कारण होते होंगे? सुमित ने अपने आसपास पढ़ने की जितनी सामग्री उपलब्ध थी, उन्हीं को गिनाया, उसने पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य किताबों का नाम नहीं लिया। इसके मायने हैं कि उसे स्कूल या घर में बाल-साहित्य पढ़ने को नहीं मिला। अगर सुमित को पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य किताबें भी पढ़ने के लिए दी जातीं तो शायद उसके पढ़ने का कौशल और भी बेहतर रूप से विकसित होता। साथ ही, वह बेहतर बाल-साहित्य से परिचित भी होता, क्योंकि किताबें हमें केवल अपने जीवन से ही नहीं जोड़तीं बल्कि अन्य परिवेशों और सन्दर्भों से भी हमारी पहचान कराती हैं।

"कक्षा में सब बेहतर रूप से पढ़ पाएँ, इसके लिए क्या-क्या उपाय किए जा सकते हैं?" इस प्रश्न पर बच्चों ने कहा –

- जिन बच्चों को पढ़ना आता है, उन्हें अन्य बच्चों को पढ़ने में मदद करनी चाहिए।
- सबको मिलकर पढ़ना चाहिए या छोटे-छोटे समूह में पढ़ना चाहिए।
- अकेले बैठकर पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए।
- जितने भी विषयों की किताबें या पढ़ने की चीज़ हाथ लगे, पढ़नी चाहिए।
- सामान लाने या रखने के लिफाफे आदि को भी पढ़ सकते हैं।
- हमारे आसपास बहुत सारे बोर्ड और इश्तेहार लगे होते हैं, उनको पढ़ना चाहिए।
- अखबार पढ़ना चाहिए।
- अपने परिवार और शिक्षकों की मदद लेनी चाहिए।

सीखने के अनुभव

बात को आगे बढ़ाते हुए बच्चों से पूछा, "हमें सीखने या कुछ हासिल करने के लिए लगातार मेहनत करनी चाहिए, ऐसा आपने कहा। क्या आपके पास भी सुमित की तरह ऐसा कोई अनुभव है, जहाँ किसी चीज़ को सीखने के लिए आपने मेहनत की हो और सीख पाए हों?" इस पर बच्चों ने अपने अनुभव रखे –

- मैंने ड्रॉइंग बनाना सीखने के लिए बहुत मेहनत की। अब मैं बहुत अच्छी ड्रॉइंग बना लेती हूँ।

- मुझे गणित में दिक्कत होती थी लेकिन मैंने बहुत मेहनत की और सीख गया। अब मैं आराम-से भाग का सवाल हल कर लेता हूँ। इसके लिए मैंने ग्यारह तक पहाड़े याद किए। अब मैं ग्यारह के पहाड़े तक का कोई भी भाग का सवाल हल कर सकता हूँ।
- मैंने खाना बनाना सीखा।

खाना बनाना सीखने की बात पर आधे से अधिक बच्चों ने अपना हाथ उठाकर बताया कि उनको भी खाना बनाना आता है। अब बातचीत की गाड़ी उसी दिशा में चल पड़ी कि खाना बनाना सीखने के लिए किसने क्या और कितनी मेहनत की, और क्या-क्या बनाना सीखा। सभी सामने आ-आकर अपनी खाना बनाना सीखने की यात्रा और कोई विशेष खाना बनाने की विधि, सबके साथ साझा करने लगे। जैसे – मुर्गी और मच्छी पकाने की अलग-अलग विधियाँ, चावल, आलू और चाऊमिन बनाने की विधियाँ आदि। यह देखना अच्छा लगा कि इसमें लड़के और लड़कियों की भागीदारी बराबर ही थी।

एक ने अपनी साइकिल चलाने की कहानी सबको सुनाई, तो दूसरे ने कागज़ का रॉकेट बनाना सिखाया। किसी ने स्वयं मिट्टी के बर्तन बनाना सीखने और उन्हें बाज़ार में बेचने का किस्सा सबके सामने रखा। वहीं कोई अपनी साइकिल में लाइट लगाने की पूरी जुगत और विधि बताने लगा कि कैसे उसने बैटरी के साथ, तार की मदद से, बल्ब को जोड़कर अपनी साइकिल के लिए रोशनी की व्यवस्था की, ताकि वह रात के अँधेरे में भी साइकिल चला सके।

केवल पाँच बच्चे ही ऐसे थे जिन्होंने कई बार अनुरोध करने पर भी अपनी तरफ से कोई बात रखने की कोशिश नहीं की थी। फिर इन सभी बच्चों को सामने बुलाया गया तो इन बच्चों ने भी, छोटे में ही सही, अपने अनुभवों को रखने का प्रयास किया और लगभग उसी तरह के अनुभव साझा किए। इस प्रकार सभी को अपने अनुभव साझा करने के मौके दिए गए। कुछ बच्चों ने तो बहुत सारे अनुभव साझा किए। अरुण के पास तो हर विषय पर अपना अनुभव साझा करने के लिए कुछ-न-कुछ था।

आगे की सम्भावित योजना

बच्चों ने जो विचार साझा किए थे, उन पर बात की जा सकती है कि उनके दिमाग में ये बातें या वाक्य कैसे आए। जैसे –

- हम जो भी काम करें, हमें अपने ऊपर विश्वास होना चाहिए।
- कभी किसी के आगे झुकना नहीं चाहिए।
- अपने दिमाग से काम लेना चाहिए।
- नई-नई चीज़ें खोजते रहना चाहिए।
- अपना नाम रोशन करना चाहिए।

वे इन बातों के बारे में क्या सोचते हैं? बच्चों के अनुसार, इन वाक्यों के व्यक्तिगत और सामाजिक सन्दर्भ क्या हैं? जो वाक्य उन्होंने बोले, क्या वे इनको समझते भी हैं? यदि हाँ, तो कैसे समझते हैं? फिर ऐसे और भी कई वाक्यों और मुहावरों पर बात की जा सकती है, और साथ ही, इन्हें पढ़ने-लिखने के साथ जोड़ा जा सकता है।

कुछ अन्य बिन्दु और बातें

- बच्चों की बताई बातों, खाने की विधियों और अनुभवों को, उन्हीं के द्वारा लिखवाया जा सकता है।
- उन पर चार्ट बनवाकर कमरे में चस्पा किया जा सकता है।
- बच्चों की बातों और अनुभवों पर कहानियाँ या कविताएँ रची जा सकती हैं।
- कहानी और कविता के अनुसार चित्र या मुख्यपृष्ठ भी बनवाए जा सकते हैं।
- बच्चों का अपना कहानियों और कविताओं का संग्रह निर्मित किया जा सकता है।
- चित्रों द्वारा स्टोरी बोर्ड बनवाकर दीवार पर टाँगा जा सकता है ताकि बच्चे रोज़ाना अपने काम को देख पाएँ।

जब बच्चों को अपना किया काम कक्षा में लगा दिखाई देता है, तो इससे उनके सीखने के उत्साह में वृद्धि होती है और पढ़ना-लिखना

सीखने में भी मदद मिलती है। इससे बच्चों को वह कक्षा अपनी लगती है, जहाँ वे कुछ भी रच सकते हैं। जब बच्चे कक्षा में लगातार कुछ नया रचते हैं तो इस प्रक्रिया में दरअसल, वे अपने व्यक्तित्व में कुछ नया जोड़ते हुए, स्वयं की समझ, विचार, कल्पनाओं, सपनों और नज़रियों को रच रहे होते हैं। एक अच्छी कक्षा में रचने की प्रक्रिया में लगातार फेरबदल झाड़कर नई कल्पनाओं को रचने, अपनी मान्यताओं की पड़िलंग करने, अपने नज़रियों की खूँटी पर नए-नए नज़रियों को टाँगने और समय-समय पर अदल-बदल करने का स्थान भी होना चाहिए।

निष्कर्ष

इस दिन की पूरी प्रक्रिया को देखने से यह बात साफ तौर से

करने, सोचने और परिवर्तन करने या जोड़ने-तोड़ने के लिए भी जगह होती है, क्योंकि वही रचनात्मकता है।

बच्चों को अपने सोचने पर सोच-विचार करने की जगह भी होनी चाहिए। अपने विचारों पर पुन: विचार करने, अपनी पिछली कल्पनाओं को

दिखाई देती है कि –

- अगर बच्चों को बातचीत के मौके दिए जाएँ तो वे बहुत उत्सुकता और स्पष्टता के साथ अपनी बात साझा करते हैं और दूसरों की बात सुनते भी हैं।
- इस बात पर खास तौर से ध्यान

देने की ज़रूरत होती है कि सभी को अपनी बात रखने और दूसरों की बात सुनकर प्रतिक्रिया देने के अवसर दिए जाएँ।

- जब बच्चे अपनी बातों को साझा करते हैं तो इसमें उनको खुद-ब-खुद मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं, जिससे उन्हें उनकी भाषा के विकास में मदद मिलती है।

  इस बात पर भी खास तौर से ध्यान देने की ज़रूरत है कि जब कोई बात शुरू हो तो उस पर ठहरकर बात करनी चाहिए, फिर उससे जोड़ते हुए दूसरे विषय को पकड़ना चाहिए।
- बातचीत के मायने बच्चों को कोई बात बताना या जानकारी देना कतई नहीं है, बल्कि बातों का एक ऐसा सिलसिला शुरू करना है जिसमें बच्चे अपने विचारों, अनुभवों, सन्दर्भों, कल्पनाओं, अहसासों, ख्वाहिशों, डरों, खुशियों, असन्तुष्टियों, शरारतों आदि को रख सकें।
- किसी भी बात का यूँ ही हो जाना और फिर खत्म हो जाना, बातचीत के द्वारा सीखने के उद्देश्यों को पूरा नहीं करता।

मौअज़्ज़म अली: 1993 से थिएटर, ड्रामा और कला के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। फिलहाल, 2012 से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, रुद्रपुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड में स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं।

सभी चित्र: तविशा सिंह: भोपाल निवासी तविशा हमेशा स्केचिंग या किताब पढ़ते हुए मिलती हैं। आप इलस्ट्रेटर-चित्रकार हैं। कहानियों के प्रति उनका बढ़ता लगाव, उन्हें चित्रों के साथ स्टोरी-टेलिंग करने की कला की ओर ले गया।